आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-11-14

विश्व परिवर्तक या विश्व कल्याणकारी बनने के लिए स्वयं को सम्पूर्णता के आईने में निज स्वरूप को देखो.

ब्राह्मणों का टाइटिल और कर्तव्य ---- आज बापदादा ब्राह्मण बच्चों की आदि से अब तक के जीवन में, ब्राह्मणों का जो विशेष कर्तव्य है - विनाश और स्थापना का, उस कर्तव्य में हर एक किस रफ्तार से चल रहे हैं, उस कर्तव्य की गति को देख रहे हैं. ब्राह्मणों का कर्तव्य के आधार से विशेष टाइटिल है - विश्व कल्याणकारी, विश्व के आधारमूर्त, विश्व के उद्धारमूर्त, विश्व के परिवर्तक. बापदादा चाहते है कि जैसे टाइटल है उसी प्रमाण कर्तव्य का प्रैक्टिकल रुप कहॉ तक हुआ है और आगे कहॉ तक होना है? हर एक अपने कर्तव्य की परसेन्टेज को देखो. समय प्रमाण स्पीड तीव्र है या अभी तीव्र होनी है?

ब्राह्मणों को अपने टाइटल अनुसार स्वयं को तैयार करने की चैकिंग -

१. सबसे पहली बात स्वयं को चेक करो -
- स्वयं प्रति विनाश और स्थापना के कर्तव्य में पास्ट के हिसाब-किताब, पुराने स्वभाव-संस्कार कहॉ तक विनाश किए हैं?
- और नये स्वभाव-संस्कार अर्थात बाप समान स्वभाव-संस्कार की स्थापना कहॉ तक की है?
- पुराना सम्पूर्ण विनाश किया है वा अधूरा किया है? जितना पुराना विनाश किया है उतना नया संस्कार वा स्वभाव धारण होगा.
- चेक करो किस गति से स्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं?

२. दूसरों के प्रति -
- स्वयं के सम्बन्ध, सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के पुराने संस्कार को न देखते हुए, अपने कर्तव्य की स्मृति द्वारा वा अपने टाइटल की समर्थी द्वारा उन आत्माओं में भी परिवर्तन करने की गति कहॉ तक है?

- कैसी भी तमोगुणी आत्मा हो, लेकिन ऐसी आत्माओं के प्रति भी कल्याण की भावना रहती है वा घृणा आती है? रहम आत्मा है या रोब में आते हो? रोब माना तमोगुणी आत्माओं को परिवर्तन कि वृति रखने की जगह उसकी कमी-कमजोरीओं को देखते, कम्पलेन करते रहते है.

३. विश्व कि सर्व आत्माओं के प्रति --
- विश्व की सर्व आत्माओं प्रति सदा संकल्प में कल्याण करने की स्मृति रहती है?
- बेहद की सेवा अर्थात विश्व सेवा की जिम्मेवारी समझते हुए चलते हो?
- विश्व की आत्माओं की मनसा सेवा करते हो? ज्ञान और गुणों के खजाने को महादानी बन दान करते रहते हो?
- स्वयं को विश्व के आगे ऑथोरिटी समझते हो? वा जहॉ निवास करते हो उस देश वा गाँव की ऑथोरिटी समझते हो?
- प्रैक्टिकल स्मृति में क्या सेवा रहती है? हद की या बेहद की?
- संकल्प में इतनी समर्थी है जो विश्व की आत्माओं तक शक्तिशाली संकल्प द्वारा सेवा कर सको?
- अपनी वृति की शुद्धि अनुसार वायुमण्डल को शुद्ध कर सकते है. वृति की शक्ति है - शुद्धि अर्थात प्युरिटी. प्युरिटी का आधार है - भाई-भाई की स्मृति की वृति. तो यह वृति कहॉ तक बनी है?

अब समझा कर्तव्य के लिए क्या चेक करना है? विश्व कल्याण की सेवा के क्षेत्र में सहज सफलता का साधन - प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप की प्रत्यक्षता है. बोलते हो कि हम ब्राह्मण आलमाइटी अथॉरिटी हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, मायाजीत हैं, रहमदिल हैं, रुहानी सेवाधारी हैं. तो जो बोलते हो वह स्वयं के प्रैक्टिकल स्वरूप में दिखना चाहिए.

इस वर्ष स्वयं को सम्पन्न बनाए विश्व कल्याणकारी बनो. स्वयं को चेक करो और चेन्ज भी करो.

ॐ शांति.